21. ईद

रमज़ान का महीना शुरू हो गया था । लोग रोज़े रखने लगे थे। दस साल का नन्हा असलम भी रोज़ा रखने की ज़िद करने लगा। उसकी अम्मी ने उसे बहुत समझाया, "बेटा अभी तुम बहुत छोटे हो। रोज़े में दिन भर कुछ भी नहीं खाया जाता। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? जब तुम बड़े हो जाओगे, तब रोज़े रख लेना।"

इतना समझाने पर भी असलम नहीं माना । उसने तय कर लिया कि वह रोज़े ज़रूर रखेगा। उसने तो अपने लिए नए कपड़े पसंद भी कर लिए थे। रहीम चाचा की दुकान पर टँगा कुर्ता-पायजामा उसे बहुत पसंद था और उसके ऊपर टँगी ज़री की कढ़ाई वाली सदरी तो उसे अपनी तरफ खींचने लगती थी।

असलम अपनी अम्मी के साथ रहता था। उसके अब्बा का इंतकाल हो चुका था। उसके और कोई भाई-बहन नहीं थे। असलम की अम्मी दिन भर चिकन कपड़ों पर कढ़ाई करती थीं। उससे जो थोड़े-बहुत पैसे मिलते, उससे किसी तरह रूखी-सूखी रोटी और असलम की पढ़ाई चल रही थी।

असलम की अम्मी हमेशा सोचती कि असलम जब पढ़-लिख जाएगा और बड़ा होकर कमाने लगेगा, तो उनकी सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। इसीलिए वे घर की हालत ठीक न होने के बावजूद मेहनत करके असलम को पढ़ा रही थीं। असलम ने रोज़े रखने शुरू कर दिए थे। वह सुबह चार बजे अपनी अम्मी के साथ उठ जाता । जो कुछ थोड़ा बहुत अग्गी बना देतीं चुपचाप खा लेता। फिर दिन भर वह कुछ भी

नहीं खाता, पानी तक नहीं पीता। इसी बीच वह स्कूल भी जाता। यह देखकर उसकी अम्मी को चिंता होने लगती। वे असलम को समझातीं कि बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा-बहुत खाने की छूट होती है, पर वह नहीं मानता और शाम को अपनी अम्मी के साथ ही रोज़ा खोलता।

असलम ने अपनी अम्मी को बता दिया था कि वह इस बार ईद पर नए कपड़े ज़रूर लेगा। उसकी अम्मी भी चाहती थीं कि उनका बेटा ईद पर नए कपड़े पहने। पर, कहाँ से आए नए कपड़े? कैसे खरीदेंगे? उनकी हालत ऐसी नहीं थी।

एक दिन अपनी अम्मी के साथ बाज़ार जाते समय असलम ने रहीम चाचा की दुकान पर टँगे कपड़े अम्मी को दिखाए और ईद पर यही कपड़े लेने की ज़िद की। फिर वह अपनी अम्मी को खींचकर रहीम चाचा की दुकान पर ले गया। उसकी अम्मी ने डरते-डरते रहीम चाचा से कपड़ों के दाम पूछे । दो सौ रुपए सुनकर उनका कलेजा धक् से रह गया। वे चुपचाप असलम को लेकर घर वापस लौट आईं। रास्ते भर असलम उन कपड़ों की तारीफ करता रहा।

असलम की इच्छा और उन कपड़ों के प्रति उसका मोह देखकर असलम की अम्मी सोच में पड़ गईं। वे अपने बेटे का दिल तोड़ना नहीं चाहती थीं, पर दो सौ रुपए के कपड़े खरीदना उनके वश में नहीं था। आखिर उन्होंने बहुत सोच-विचारकर तय किया कि दो सौ रुपए नहीं तो कम से कम एक सौ रुपए का जुगाड़ करके वे असलम को ईद में नए कपड़े ज़रूर लेकर पहना देंगी।

अब असलम की अम्मी ने और अधिक काम करना शुरू कर दिया। वे सुबह जल्दी उठकर कढ़ाई का काम शुरू कर देतीं। दिन भर और फिर रात देर तक कढ़ाई करती रहतीं। एक तो रोज़ा, ऊपर से दुगुनी मेहनत, इसका असर उनकी सेहत पर पड़ने लगा। पर उन्हें तो ईद से पहले नए कपड़े ख़रीदने के लिए रुपए इकट्ठे करने की धुन सवार थी।

आज असलम बहुत खुश था । ईद में केवल एक दिन बाकी था और उसके हाथ में पूरे दो सौ रुपए थे। उसकी अम्मी ने दिन-रात एक करके पूरे दो सौ रुपए इकट्ठे कर लिए थे। उसकी अम्मी की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, इसलिए उन्होंने रुपये देकर असलम को रहीम चाचा की दुकान से वही कपड़े लेने भेज दिया।

रुपए लेकर असलम रहीम चाचा की दुकान की तरफ तेज़ी से बढ़ा चला जा रहा था। उसके मन में खुशी के लड्डू फूट रहे थे । वह तरह-तरह की कल्पनाओं में खोया हुआ था । वह सोचता जा रहा था कि कल सुबह वह नए कपड़े पहनकर ईदगाह जाएगा। अपने दोस्तों से ईद मिलेगा। उसके इतने अच्छे कपड़े देखकर सभी दोस्त दंग रह जाएँगे। इतने अच्छे कपड़े तो और किसी दोस्त के नहीं होंगे। वह सभी दोस्तों को बताएगा कि ये कपड़े उसे उसकी अम्मी ने दिलवाए हैं। इन्हीं ख्यालों में डूबा असलम रुपए लेकर तेज़ कदमों से चला जा रहा था।

अचानक असलम की चाल धीमी हो गई। वह कुछ उदास-सा हो गया। वह सोच में डूब गया। उसके सामने कल स्कूल में घटी घटना घूम गई। कल स्कूल में मोहन कितना रो रहा था। मोहन असलम की ही कक्षा में पढ़ता था। वह पढ़ने में बहुत तेज़ था। मोहन असलम का पक्का दोस्त था। दोनों कक्षा में एक ही साथ बैठते। मोहन बहुत गरीब घर का लड़का था। उसके पिता मज़दूरी करके किसी तरह घर का खर्च चलाते थे। मोहन की माँ नहीं थी और न ही कोई भाई-बहन। पिछले दो महीने से मोहन के पिता बहुत बीमार चल रहे थे, जिससे वे काम पर नहीं जा पाते थे। घर में दवा के लिए पैसे भी नहीं थे। और अब तो खाने के लिए भी घर में कुछ नहीं बचा था। अब उन बेचारों का क्या होगा?

असलम सोचने लगा कि कितनी मेहनत से रात-दिन एक करके उसकी अम्मी ने रुपए इकट्ठे किए हैं और वह इन्हें नए कपड़े खरीदकर एक दिन की खुशी के लिए खर्च कर देगा। अगर वह ये रुपए मोहन को दे दे तो उसके पिता की जान बच सकती है। वह अनाथ होने से बच जाएगा। वह पढ़ाई भी कर पाएगा। एक अच्छा दोस्त बिछुड़ने से बच जाएगा और अम्मी की मेहनत भी सफल हो जाएगी। ईद में अगर नए कपड़े नहीं पहने तो इससे क्या फ़र्क पड़ेगा। यह सब सोचकर असलम तेज़ी से मोहन

के घर की तरफ चल दिया। मोहन रुआँसा-सा चारपाई के पास बैठा था। उसके पिता चारपाई पर लेटे हुए थे। असलम को देखकर मोहन की आँखें फिर भर आईं।

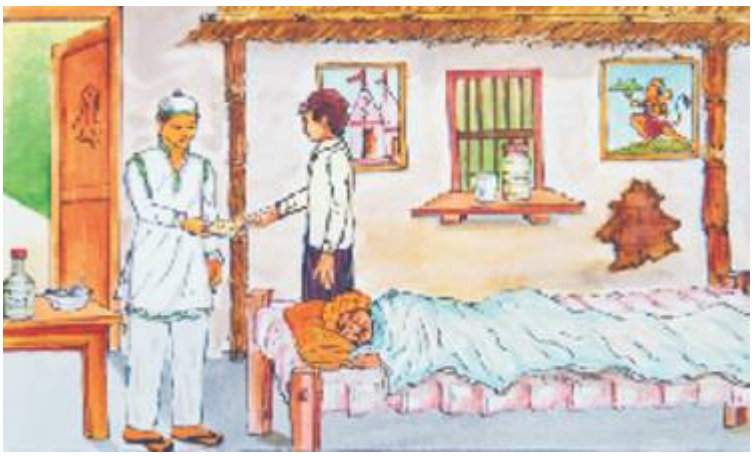

असलम ने मोहन को ढाँढ़स बँधाया और उसे रुपए देते हुए बोला, "दोस्त, इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ। असलम के पास इतने रुपए देखकर मोहन अवाक् रह गया। असलम ने उसे समझाते हुए कहा, "मोहन, ये रुपये बहुत ही मेहनत के हैं। मेरी अम्मी ने मुझे नए कपड़े खरीदने के लिए दिए थे। लेकिन इन रुपयों का इससे अच्छा दूसरा कोई उपयोग नहीं हो सकता।"

मोहन ने बहुत इनकार किया पर असलम नहीं माना। उसने ज़बरदस्ती रुपए मोहन की जेब में रख दिए। मोहन अपने आपको रोक नहीं सका। वह असलम से लिपटकर रोने लगा। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे असलम के रूप में भगवान स्वयं उसकी मदद के लिए आए हों।

असलम जब वापस अपने घर पहुँचा तो उसकी अम्मी उसे खाली हाथ आया देखकर हैरान रह गईं। असलम ने जब पूरी बात अपनी अम्मी को बताई तो उनकी आँखें छलछला आईं। उन्होंने असलम को अपने सीने से लगा लिया। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें अपने इस गन्हें, लेकिन विचारों से बहुत बड़े, बेटे पर नाज़ होने लगा। वे बार-बार असलम का मुँह चूमने लगीं। असलम को भी अपनी ऐसी अम्मी पर नाज़ था।

उस रात अस्लम ने एक सपना देखा। अल्लाह उससे कह रहे हैं, "असलम, तुम एक नेक इंसान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई।"

–श्री मुरलीधर

शब्दार्थ		
इंतकाल	–	मृत्यु
उत्साह	–	जोश
उपयोग	–	व्यवहार, काम में लाना
सदरी	–	बिना बाँह का कुर्ता
तंगहाली	–	रुपये-पैसे की कमी
अवाक्	–	स्तब्ध, हैरानी से चुप
नाज़	–	अभिमान, गर्व

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. ईद क्यों मनाई जाती है? उस दिन क्या-क्या होता है?
2. क्या आपने असलम की तरह कभी अपने दोस्त की मदद की है या दोस्त से मदद ली है? बताएँ।
3. लोग कितने दिनों तक रोज़े रखते हैं एवं रोज़े में क्या करते हैं?
4. आप त्योहार पर अपने माता-पिता से क्या खरीदने के लिए कहते हैं?
5. रोज़े के दौरान असलम और उसकी अम्मी की दिनचर्या बताएँ।

पाठ से

1. असलम रोज़ा क्यों रखना चाहता था? रोज़ा न रखने के वास्ते उसकी अम्मी ने क्या दलीलें दीं?
2. असलम ने ईद पर पहनने के लिए कौन-से कपड़े कहाँ पसंद किए? उस कपड़े का कितना दाम था?
3. अम्मी के द्वारा दिए गए रुपयों का असलम ने क्या किया?
4. असलम ने मोहन की मदद क्यों की?

किसने, किससे कहा?

1. "बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा-बहुत खाने की छूट होती है।"
   ---------- ने ---------- से कहा।
2. "इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ।"
   ---------- ने ---------- से कहा।
3. असलम तुम एक नेक इन्सान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई है।"
   ---------- ने ----------से कहा।

पाठ से आगे

(1) असलम के स्थान पर आप होते तो अम्मी के दिए रुपयों का क्या करते? लिखिए।

(2) मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ कौन-सा है और मुसलमान हज करने के लिए कहाँ जाते हैं? पता कीजिए।

आपकी अम्मी

असलम की अम्मी ने उसे ईद पर नए कपड़े दिलवाने के लिए दिन-रात मेहनत की।

1. क्या आपकी माँ आप की बात पूरी करने के लिए बहुत मेहनत करती हैं? बताइए।
2. आपकी माँ दिन भर क्या-क्या काम करती है? उनके कामों की एक सूची बनाइए।

भाषा के नियम

1. **रेखांकित शब्द का विलोम (उल्टा) शब्द रिक्त स्थान में भरें–**

(क) असलम सबसे ज्यादा <u>प्रसन्न</u> था, न कि .....।

(ख) उसका दोस्त <u>गरीब</u> था, न कि .....।

(ग) चलते-चलते बाज़ार <u>निकट</u> आ गया और गाँव ..... हो गया।

(घ) कभी <u>आसमान</u> पर जाते मालूम होते हो तो कभी ..... पर गिरते हुए।

2. **कभी-कभी शब्दों का प्रयोग जोड़े के रूप में किया जाता है, जैसे देवी-देवता, टूटी-फूटी, धीरे-धीरे आदि। यहाँ पर दोनों शब्दों के अर्थ हैं, परंतु कुछ निरर्थक शब्दों के साथ भी जोड़े बनते हैं, जैसे- चाय-वाय।**

इस प्रकार के तीन जोड़े बनाइए–

....

3. नाज-नाज़

- गोदाम में **नाज** भरा हुआ था।
- अम्मी को असलम पर **नाज़** था।

पहले वाक्य में 'नाज' शब्द का मतलब है- अनाज। दूसरे वाक्य में 'नाज़' का मतलब है-गर्व होना। दोनों शब्दों में केवल नुक्ता (.) का अंतर है। इससे शब्द का मतलब बदल जाता है।

(क) नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए और इनके बीच के अंतर को समझिए–

- तेज – तेज़
- राज – राज़
- जरा – ज़रा
- जंग – ज़ंग
- जमाना – ज़माना
- सजा – सज़ा
- गज – गज़

(ख) सही शब्द से वाक्य पूरा कीजिए –

(i) असलम ने अम्मी को ---------- की बात बताई। (राज/राज़)

(ii) अम्मी कढ़ाई के ---------- में माहिर थीं। (फन/फ़न)

(iii) ईद पर पूरा बाज़ार ---------- हुआ था। (सजा/सज़ा)

(iv) पुराने ---------- में हरकारा चिट्ठी पहुँचाता था। (जमाने/ज़माने)

(v) दोनों राजाओं में ---------- छिड़ गई (जंग/ज़ंग)

(vi) घोड़ा बहुत ---------- दौड़ने लगा। (तेज/तेज़)

करके देखें

1. विभिन्न पर्व त्योहारों से संबंधित चित्र/लेख ढूँढ़ें एवं कक्षा में प्रदर्शित करें।
2. प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' पढ़िए। बताइए कि दोनों में क्या समानता और अन्तर है?

आपकी कहानी

दिए गए चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए–

Developed by: ABSOL www.absol.in